अध्याय - ४

प्रद्त्तो का विश्लेषण,व्याख्या तथा परिणाम

4 अध्याय - ४

4.1 प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा व्याख्या

प्रस्तुत अध्याय में संकलित प्रदत्तो का विश्लेषण,परिणाम तथा व्याख्या का वर्णन किया गया है.प्रदत्तो का विश्लेषण उपकरणों के क्रम अनुसार किया है | इसकी व्याख्या निम्नानुसार है :-

अवलोकन अनुसूची

- **भाषा विकास**

4.1.1 बच्चों के श्रवण कौशल के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण :-

प्रश्न क्रमांक ४.१.१ यह दर्शाता हैं, कि पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के श्रवण कौशल के लिए विद्यालय के शिक्षक कहानी सुनाते हैं, विद्यालय के शिक्षक गीत व कविता उपयोग करते हैं. विद्यालय के शिक्षक विभिन्न आवाज बोलकर इसको पहचानने के लिए बच्चों को प्रेरित करते हैं और विद्यालय के बच्चों को निर्देश देकर तथा विभिन्न कार्य करने के लिए कह कर उसमे भाषा भाव समझने के प्रयास कराये जाते हैं जबकि श्रवण कौशल के विकास के लिए किसी विशेष खेल का आयोजन विद्यालय में नही किया जाता |

डी.ए.वी. संगठन द्वारा निर्मित निर्देशों व ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार सभी पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के श्रवण कौशल विकास के लिए शिक्षक को कहानी सुनाना,गीत व कविता गाना निर्देश देना,विभिन्न आवाज के खेल आदि क्रियाँए करानी चाहिए |

इस ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में विद्यालय में कहानी सुनाना,गीत व कविता गाना तथा विभिन्न आवाजे निकालने वाले खेल कराये जाते हैं.विद्यालय में शिक्षक बोल कर निर्देश देना जैसे- बैठो,चलो शांत रहो,आदि क्रियाएं कराते हैं, जबकि विद्यालय में श्रवण से सम्बंधित खेल क्रियाओं को अनदेखा किया जाता है |

4.1.2 विभिन्न आवाजों को पहचानने. व अंतर बताने के लिए उपयोग किये जाने वाले उपकरण का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१.२ के अनुशार बच्चों को विभिन्न आवाजों को पहचानने व उनमे अंतर बताने के लिए विद्यालय के शिक्षक टेप रिकॉर्डर उपयोग करते हैं. विद्यालय के शिक्षक स्वयं विभिन्न जानवरों,वाद्य यंत्रों आदि के आवाज निकालते हैं, विद्यालय में कंप्यूटर उपयोग किये जाते हैं,विद्यालय में बच्चों को सी.डी. दिखाई जाती है,विद्यालय में टी.वी.उपयोग करते हैं. विद्यालय में बच्चो को साउंड बॉक्स द्वारा यह अनुभव प्रदान किया जाता है |

ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यालय में टेप रेकॉर्डर,साउंड बॉक्स,संगीत वाद्ययंत्र आदि उपकरण द्वारा बच्चों में आवाज पहचानने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए |

इस सन्दर्भ में विद्यालय में टेप रेकॉर्डर उपयोग किया जाता है जबकि विद्यालय में शिक्षक स्वयं विभिन्न आवाजें निकाल कर बच्चों को उसे पहचानने को कहता है.सी.डी, टी.वी.संगीत वाद्य यन्त्र आदि उपकरण भी विद्यालयों में उपयोग किये जाते हैं |

4.1.3 बोलने की क्षमता के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१.३ यह दर्शाता है कि बच्चों में बोलने की क्षमता के विकास के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक गीत व कविता का उपयोग करते हैं, विद्यालय में शिक्षक बच्चों को किसी वस्तु या जानवर आदि की कहानी सुनाने के लिए कहते हैं, विद्यालय में शिक्षक शब्दों को बोल कर बच्चों से उनकी पुनराव्रत्ति कराते हैं, विद्यालय में शिक्षक बच्चो को उनके समूह या कक्षा को संबोधित करने के लिए कहते हैं, विद्यालय में शिक्षक बच्चो से प्रश्न पूंछते हैं जो उनके परिवार या दिनचर्या से सम्बंधित हों तथा विद्यालय में पुस्तक पढवाते हैं.विद्यालय में चित्र पुस्तक तथा खेल के द्वारा बच्चों में बोलने की क्षमता को विकसित किया जाता है.

ई.सी.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में शब्दकोष तथा स्पष्ट व सही बोलने की क्षमता का विकास करने के लिए संवाद, चित्र पुस्तक कहानी तथा गीत व कविता, आदि क्रियाएं शिक्षको द्वारा करवाई जानी चाहिए |

इसके अनुसार विद्यालय में शिक्षक गीत, कविता, कहानी, प्रश्न उत्तर तथा समूह संबोधन द्वारा संवाद क्रियाएं कराई जाती हैं. पुस्तक पढना, खेल द्वारा तथा चित्र पुस्तक द्वारा शब्दकोश व बोलने की क्षमता का विकास किया जाता है|

4.1.4 पढ़ने की आदत विकसित करवाने के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१.४ से स्पष्ट है बच्चों में पढने की आदत विकसित करने के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक बच्चों को अक्षर ज्ञान कराते हैं.विद्यालय में शिक्षक चित्र पुस्तकों का उपयोग कराते हैं, विद्यालय में शिक्षकों द्वारा चित्र व चार्ट का उपयोग किया जाता है,विद्यालय में बच्चों को पुस्तक पाठन कराया जाता है|

ई.सी.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में द्रश्य-श्रव्य समायोजन तथा पढ़ने की आदत के विकास के लिए चित्र कार्ड,चार्ट तथा चित्र-पठन,जोड़ा बनाना,अक्षर-ज्ञान तथा इन्हें जोड़ने की योग्यता का विकास करने के लिए शिक्षक को क्रियाएं कराई जानी चाहिए|

इसके संदर्भ में विद्यालय में अक्षर ज्ञान कराया जाता है. विद्यालय में चित्र/कार्ड द्वारा पड़ने की आदत के विकास की क्रियाएं कराई जाती हैं|

4.1.5 लिखने की आदत व नेत्र समन्वय के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण -

प्रश्न क्रमांक ४.१.५ यह दर्शाता है की पूर्व प्राथमिक विद्यालय में लिखवाते हैं,विद्यालय में डॉट जोड़कर नेत्र हाथ समन्वय विकसित किया जाता है, विद्यालय में इसके लिए शिक्षक बच्चों से चित्र बनवाते हैं,विद्यालय में थम्ब प्रिंटिंग,गेंद से खेलना,ब्लाक बनाना आदि क्रियाएं कराई जाती हैं,विद्यालय में वस्तुओं को आकर के अनुसार क्रमबद्ध करना जैसी क्रियाएं कराई जाती हैं |

ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में लिखने की आदत का विकास कने तथा नेत्र- समन्वय विकसित करने के लिए ट्रेसिंग/डॉट जोड़ना तथा लिखने की क्रिया को महत्वपूर्ण माना गया है |

इसके संदर्भ में अवलोकन में यह पाया गया कि विद्यालय में डॉट जोड़ने कि क्रियाएं कराई जाती हैं तथा विद्यालय में अन्य क्रियाएं भी कराई जाती हैं।

बौद्धिक विकास -

4.1.6 **बच्चों में समझने पहचानने आदि की क्षमता के विकास के लिए विद्यालय में होने वाली क्रियाओं का विवरण -**

प्रश्न क्रमांक ४.१.६ यह दर्शाता है कि पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चों को किसी वस्तु की पहचान व समझने के लिए शिक्षक वस्तु की पहचान

4.1.7 **पर्यावरण अवधारणाओ के विकास हेतु विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का विवरण-**

प्रश्न क्रमांक ४.१.७ यह दर्शाता है कि पूर्व प्राथमिक विद्यालय में कहानी, फ़ील्डट्रिप, चित्र व चार्ट,सी.डी/फिल्म,गार्डन में खेलना आदि क्रियाएं शिक्षक द्वारा पर्यावरण की जानकारी (जैसे-पेड़, जानवर आदि) शिक्षको द्वारा कराई जाती हैं.

ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में पर्यावरणीय अवधारनाओ-पानी ,हवा,पेड़-पौधे,के विकास के लिए विद्यालय में खेल,फील्ड ट्रिप,चित्र द्वारा जानकारी शिक्षको द्वारा प्रदान कराई जाती है.

इस संदर्भ में विद्यालय में चित्र,चार्ट,फील्ड ट्रिप आदि क्रियाँए कराई जाती हैं।

4.1.8 **सोचने की क्षमता के विकास के लिए होने वाली गतिविधियों का विवरण -**

प्रश्न क्रमांक ४.१.८ यह प्रदर्शित करता है की बच्चों में सोचने क्षमता के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालय में कहानियाँ, पहेलियाँ, चित्र-चार्ट, क्ले-मोडलिंग आदि क्रियाएं बच्चों द्वारा कराई जाती हैं.

ई.सी.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में सोचने की क्षमता विकसित करने के लिए विद्यालय में विभिन्न किरदार निभाना,जोड़ा-बनाना,ब्लाक-जोड़ना,पहेलियाँ पूंछना आदि क्रियाएं कराई जानी चाहिए।

इस संदर्भ में बच्चों द्वारा विभिन्न किरदार निभाने वाले खेल की अन्य क्रियाएं विद्यालय में कराई जाती हैं।

सर्जनात्मक एवं कलात्मक विकास -

4.1.9 बच्चों के सर्जनात्मक तथा कलात्मक विकास के लिए विद्यालय में होने वाली क्रियाओं का विवरण-

बच्चों में प्रश्न क्रमांक ४.१.९ यह प्रदर्शित करता है कि बच्चों के सर्जनात्मक तथा कलात्मक विकास के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालय में चित्र बनाना,रंग भरना,थम्ब प्रिंटिंग,पेपर फोल्डिंग,क्ले मोडलिंग आदि क्रियाएं कराई जाती हैं |

4.1.10 आत्माभिव्यक्ति के विकास के लिए कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१.१० यह पदर्शित करता है की पूर्व प्राथमिक विद्यालय में नृत्य करना,बच्चों से कहानी सुनना,खेलना,फैंसी ड्रेस,गीत/नाटक आदि क्रियाएं बच्चों में आत्माभिव्यक्ति की भावना के विकास के लिए कराई जाती हैं.

ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों में आत्माभिव्यक्ति के विकास के लिए कहानियाँ/नाटक,गीत बनाना,विभिन्न भूमिका निभाना,कठपुतलियों का खेल आदि क्रियाँए करानी चाहिए.

इस संदर्भ में विद्यालय इस ओर ध्यान देता हैं व उनमे उपरोक्त क्रियाएं कराई जाती हैं |

शारीरिक विकास -

4.1.11 बच्चों के शारीरिक विकास के लिए विद्यालय में कराई जाने वाली क्रियाओं का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१.११ यह दर्शाता है कि बच्चों के शारीरिक विकास के लिए विद्यालय में पी.टी./ड्रिल, भिन्न-भिन्न सामन्य व्यायाम, योग, खेल-कुंद की क्रियाए कराई जाती हैं |

ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों के शारीरिक विकास के लिए विद्यालयों में बॉल के साथ खेलना, दौड़ने-चलने वाले खेल, समूह खेल तथा झुलना, फिसलने आदि के उपकरण तथा खेल क्रियाएं होनी चाहिए |

इस संदर्भ में चलने-दौड़ने, पी.टी.-ड्रिल, झूलने, फिसलने आदि के साथ खेलने हेतु विद्यालय में खेल-कुंद की क्रियाएं कराई जाती हैं | इसके साथ साथ विद्यालय में सामान्य योग तथा व्यायाम कराया जाता है |

स्वाथ्य एवं पोषण -

4.1.12 बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए विद्यालय में कराई जाने वाली गतिविधियों का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१.१२ यह दर्शाता है कि पूर्व प्राथमिक विद्यालय में टॉयलेट ट्रेनिंग, यूनिफार्म जांचना, नाख़ून जांचना, बाल जांचना, विद्यालय में स्वच्छता के प्रति जागरूकता के लाने के उद्देश्य से समय-समय पर डॉक्टर भी बुलाया जाता है | इस प्रकार स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास किया जाता है |

ई.सी.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों का प्रसाधन क्षेत्र में अवलोकन तथा उन्हें निर्देशन देना चाहिए, उन्हें अस्पताल की फील्ड ट्रिप पर ले जाया जा सकता है तथा डॉक्टर को विद्यालय में बुला कर तथा अच्छी आदतों व स्वस्थ्य भोजन पर विचार-विमर्श द्वारा बच्चों को स्वच्छता व स्वास्थ्य के लिए जागरूक करना चाहिए |

इस संदर्भ में विद्यालय में टॉयलेट ट्रेनिंग, डॉक्टर का विद्यालय भ्रमण तथा इस सम्बन्ध अच्छी आदतों का प्रशिक्षण जैसी क्रियाएं होती हैं साथ ही बालो की जांच,जूतों की जांच आदि क्रियाएं भी होती हैं |

4.1.13 बच्चों की स्वास्थ्य तथा पोषण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का विवरण-

प्रश्न क्रमांक ४.१३ यह दर्शाता है कि पूर्व प्राथमिक विद्यालय बच्चों के स्वास्थ्य सम्बन्धी मेडिकल चेक-अप कराया जाता है | विद्यालय में बच्चों के पोषण के लिए अभिवाभाकों को सलाह दी जाती है, विद्यालय में शिक्षक स्वास्थ्य आहार के बारे में बच्चों को बताते हैं |

ई.सी.ई. कार्यक्रम में बच्चों का स्वास्थ्य एवं पोषण एक महत्वपूर्ण घटक है | इसकी पूर्ति हेतु प्रत्येक विद्यालय में बच्चों का नियमित चेक-अप होना चाहिए | उन्हें स्वस्थ्य आहार प्रदान किया जाना चाहिए |

इस संदर्भ में विद्यालय में छात्रो का मेडिकल चेक-अप किया जाता है.विद्यालय में स्वस्थ्य पोषण हेतु अभिवाभको को सलाह दी जाती है तथा शिक्षक सीधे बच्चो को स्वास्थ्य आहार के बारे में बताते हैं |

4.1.14 बच्चों में सामाजिक तथा भावनात्मक विकास के लिए विद्यालय द्वारा कराई जाने वाली गतिविधियों का विवरण-

प्रश्न क्रमाक ४.१.१४ यह दर्शाता है कि पूर्व प्राथमिक विद्यालय में सामूहिक खेल, टिफिन शेयरिंग, विद्यालय में कहानी, विभिन्न दिवस-उत्सव मनाना, सामूहिक कार्य करना विद्यालय में न्रत्य-नाटक क्रियाएं कराना |

ई.सी.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यालय में पेंटिंग, कहानी, नाटक, अभिवाभाक का भ्रमण, सामूहिक कार्य, विभिन्न दिवस/उत्सव मनाना आदि क्रियाएं बच्चों के सामाजिक तथा भावनात्मक विकास के लिए कराई जानी चाहिए |

इस संदर्भ में विद्यालय में ए सभी क्रियाएं कराई जाती हैं |

4.2 प्रश्नावली (शिक्षकों के लिए)

<u>शिक्षकों के लिए बनाई गयी प्रश्नावली पर शिक्षकों द्वारा दी गयी प्रतिक्रियाओं का वर्णन निम्नलिखित है-</u>

4.2.1 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के सभी शिक्षको को प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम तथा इसके उद्देश्यों के बारे में पूंर्ण जानकारी है | प्रतिक्रिया के तौर पर उन्होंने बताया- यह कार्यक्रम ६ वर्ष के बच्चो के सर्वांगीर्ण विकास हेतु एक सुनियोजित विकास कार्यक्रम है | तथा सभी शिक्षक इसके उद्देश्य पूर्ति के लिए सजग दिखे |

प्रारम्भिक बाल शिक्षा की आवश्यकता के बारे में सभी शिक्षकों ने इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया | उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम बच्चों को स्कूल में प्रवेश लेने से पहले उन्हें विद्यालय पूर्वी शिक्षा हेतु तत्पर व सक्षम बनाता है |

4.2.2 बच्चो के विकास में प्रारम्भिक शिक्षा की भूमिका पर सभी शिक्षको ने यह माना कि यह शिक्षा बच्चों के विकास में सकारात्मक सहयोग देती है | विद्यालय के शिक्षक यह मानने में असमर्थ रहे कि यह शिक्षा बाल विकास में किस तरह सहायक है विद्यालय के शिक्षको ने कहा कि यह बच्चों के सर्वांगीर्ण विकास में सहयोग देती है तथा आगे विद्यालय के लिए बच्चों में समायोजन छमता का विकास करती है |

शिक्षक अभिभावकों से संपर्क के लिए प्रत्येक महीने शिक्षक अभिभावक सभा करते हैं | विद्यालय के शिक्षक विद्यालय के कार्यों के लिए बच्चों की डायरी द्वारा अभिभावकों से संपर्क करते हैं तथा कई बार शिक्षक फ़ोन द्वारा अभिभावकों से सम्पर्क करते हैं |

ई.सी.ई.मानदंडो के अनुसार शिक्षको को अभिभावकों से सभा द्वारा तथा घर जा कर सम्पर्क करते रहना चाहिए |

4.2.3 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको ने अभिभावकों को बच्चों के स्वास्थ्य व उचित पोषण व शिष्टाचार हेतु सलाह देने की बात कही | विद्यालय में शिक्षकों ने बच्चो अध्ययन व गृहकार्य में अभिभावक को ध्यान देने व सहयोग करने की सलाह दी | विद्यालय में शिक्षको ने अभिभावकों को बच्चो को समझने व उन्हें समय देने की सलाह दी |

4.2.4 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक विद्यालय द्वारा प्राप्त उपकरणों व सामग्री से पूरी तरह संतुष्ट नही थे | शिक्षकों का कहना था कि सामग्री व उपकरणों की मात्रा संतुष्टिजनक नही है | उनका कहना था कि कुछ नई तकनिकी के उपकरणों की यहाँ कमी है |

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार प्रत्येक विद्यालय को बच्चो के शारीरिक, बौद्धिक, सर्जनात्मक विकास के लिए पर्याप्त सामग्री प्रदान करना चाहिए |

4.2.5 पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने पूर्ण विश्वास से बताया की प्रत्येक बच्चा स्कूल में कराई जाने वाली क्रियाओं भाग लेता है तथा उसे इन क्रियाओं को करने में मजा भी आता है |

- ✓ खेल विधि
- ✓ प्रश्न उत्तर विधि
- ✓ कहानी विधि
- ✓ गीत-कविता विधि
- ✓ प्रदशर्न विधि
- ✓ स्वयं करके सीखने देते हैं
- ✓ अन्य

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है की पूर्व प्राथमिक विद्यालय में शिक्षको द्वारा इन सभी विधियों का प्रयोग किया जाता है |

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार पूर्व प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम में बच्चों को खेल तथा क्रिया आधारित विधि द्वारा पढाया जाना चाहिए तथा उन्हें ३'र का औपचारिक शिक्षण नही दिया जाना चाहिए |

4.2.6 पूर्व प्राथमिक विद्‌यालय में बच्चो के विकास के लिए होने वाली क्रियाओं के बारे में शिक्षको की प्रतिक्रिया निम्नलिखित है-

❖ **शारीरिक विकास-**

4.2.7 पी.टी., ड्रिल, सामान्य व्यायाम, खेल-कुंद जैसे दौढ़ना, फिसलना, गेंद उछालना, झूले झुलना, चित्र बनाना, साइकिल चलाना, ब्लाक बनाना,क्ले मोडलिंग,न्रत्य,योग, आदि क्रियाएं कराई जाती हैं |

❖ **शब्द कोष तथा भाषा विकास के लिए-**

4.2.8 कहानी सुनाना, पिक्चर कार्ड दिखा के प्रश्न पूंछना, शिक्षक किसी भी विषय पर बच्चो के साथ विचार-विमर्श करते हैं, इस प्रकार इन क्रियाओं द्‌वारा पूर्व प्राथमिक विद्‌यालय में बच्चो के शब्द कोष और भाषा ज्ञान को बढाया जाता है |

❖ **बौद्धिक विकास के लिए-**

4.2.9 बच्चों में सोचने की क्षमता के विकास हेतु कहानी, चित्र-पुस्तक, पहेलिय, ब्लाक बनाना, तथा अन्य शैक्षिक सामग्री जैसे-सी.डी., विभिन्न आकृति, विभिन्न रंगों के आकार आदि का उपयोग किया गया | इसके अतिरिक्त शिक्षक द्‌वारा व्याख्या भी की जाती है |

❖ **सर्जनशीलता का विकास-**

4.2.10 बच्चों में नवीन व मौलिक सोच विकसित करने के लिए तथा उनकी सर्जनशीलता के विकास के लिए पूर्व प्राथमिक विद्‌यालय के शिक्षक चित्र बनाना, रंग भरना, कागज मोड़ना, कागज चिपकाना, थम्ब प्रिंटिंग, रद्दी सामान से नयी वास्तु बनाना, क्ले मोडलिंग आदि क्रियाएं करते हैं |

❖ **सामाजिक एवं भावनात्मक विकास-**

4.2.11 बच्चो में सहभागिता, सहयोग समन्वय, सामाजिक तथा भावनात्मक के लिए पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के वर्तमान परिद्रश्य में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है यहाँ बच्चों को कहानी, न्रत्य, नाटक, सामूहिक खेल, सामाजिक शिष्टाचार की आदतों का प्रशिक्षण, टिफिन शेयर करना, विभिन्न दिवस व उत्सव मना के बच्चो में स्वस्थ्य सामाजिक जीवन की नींव डाली जाती है |

4.2.12 बच्चो का मन विद्यालय में लगा रहे और वे प्रसन्न व आनंदित रहे. इस पर पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने कहा कि इसके लिए विद्यालय में विभिन्न क्रियाए जैसे- खाली समय में अपनी पसंद के खेल खेलना, बाहर जा कर खेलना, आई.सी.टी. का उपयोग करके सीखना,कहानी सुनाना आदि.उनका जन्मदिवस व उत्सव मनाये जाते हैं तथा पुरूस्कार व उपहार दिए जाते हैं |

4.2.13 विद्यालय में दैनिक क्रियाओं की योजनाओं की पूछी जाने पर पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको ने बताया कि वे दैनिक क्रियाओं को पाठ्यक्रम के आधार पर योजनाबद्ध करते हैं | जिसमे वे क्रियाएं शामिल की जाती हैं जिससे बच्चो का शारीरिक व मानसिक विकास हो तथा वे रुचिपूर्वक इसमें भाग ले सकें |

4.2.14 बच्चो के मूल्यांकन के लिए अपनाई जाने वाली विधियों का विवरण-

- ✓ मूल्यांकन परीक्षा
- ✓ खेल गतिविधि
- ✓ अवलोकन द्वारानिष्पादन
- ✓ लिखित परीक्षा कोई मूल्यांकन नही किया जाता

  विद्यालय में शिक्षक द्वारा मौखिक परीक्षा,लिखित परीक्षा,

उपरोक्त सूचि से स्पष्ट की पूर्व प्राथमिक विद्यालय में शिक्षको द्वारा बच्चो का मूल्यांकन खेल विधि, अवलोकन विधि, लिखित परीक्षा विधि के द्वारा किया जाता है|

ई.सी.ई. के मानदंडो के अनुसार बच्चो का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किया

जाना चाहिए | जिसमे उनका कार्या, खेल का औपचारिक अवलोकन किया जाना चाहिए | इस अवस्था में कोई औपचारिक परीक्षा नही होनी चाहिए |

4.2.15 विद्यालय में शिक्षण भाषा के माध्यम का विवरण-

- ✓ हिंदी
- ✓ अंग्रेजी

विद्यालय में शिक्षक अंग्रेजी के साथ-साथ बच्चो की सुविधा के अनुसार हिंदी भाषा का भी प्रयोग करते हैं|

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों से सम्प्रेषण का माध्यम उनकी मात्रभाषा/क्षेत्रिय भाषा होनी चाहिए| इस प्रकार हम कह सकते हैं की यह विद्यालय ई.सी.ई. मानदंडो की आंशिक पूर्ति करता है|

पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चो के मूल्यांकन के विकास का विवरण-

- ✓ प्रत्येक सप्ताह
- ✓ मासिक
- ✓ त्रेमासिक
- ✓ वार्षिक

विद्यालय में बच्चो का मूल्यांकन उपरोक्त सभी विधियों से किया जाता है|

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार विद्यालय में प्रत्येक बच्चे के विकास का अनौपचारिक विधि से सतत मूल्यांकन किया जाना चाहिए|

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए सुझाब देने के प्रक्रम में शिक्षको ने निम्नलिखित सुझाव दिए-

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए ई.सी.ई. कार्यक्रम में बड़े पैमाने पर आई.सी.टी. का प्रयोग करना चाहिए |

4.3 प्रारम्भिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई) कार्यक्रम प्रश्नावली (प्रशासकों के लिए)

भौतिक सुविधाएँ-

4.3.1 बच्चो के घर से विद्यालय के मध्य औसत दुरी का विवरण

बच्चो के घर से इस विद्यालय की दुरी लगभग १० किलो मीटर है| विद्यालय बच्चों को विद्यालय आने जाने के लिए वाहन सुविधा प्रदान नही करता है, न ही विद्यालय बच्चो की ट्राफिक तथा प्रदूषण आदि से सुरक्षा हेतु कोई व्यवस्था करता है|

ई.सी.ई. कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार वाहन सुविधा प्रदान नही करने वाले विद्यालय व बच्चो के घर के मध्य की दुरी १/२ किलो मीटर से अधिक नही होनी चाहिए तथा वाहन सुविधा के साथ यह दुरी ७ किलो मीटर से अधिक नही होनी चाहिए|

इस संदर्भ में पूर्व प्राथमिक विद्यालय ई.सी.ई. कार्यक्रम के मानदंडो का पालन नही करते हैं|

4.3.2 विद्यालय सुरक्षा तथा सामग्री माप का विवरण-

पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के खेलने के स्थान का क्षेत्रफल लगभग १५०० वर्ग फीट है|

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार प्रत्येक पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के खेलने के लिए मैदान का आकार न्यूनतम ३०० वर्ग मीटर या इससे अधिक होना चाहिए |

इस संदर्भ में पूर्व प्राथमिक विद्यालय ई.सी.ई. के मानदंडो को पूर्ण करता है|

4.3.3 कक्षा का आकार तथा छात्रो की संख्या का विवरण-

विद्यालय में कक्षा का आकार २०'/४०' है तथा प्रति कक्षा छात्रों की संख्या २५ है|

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार प्रत्येक पूर्व प्राथमिक विद्यालय में ३० बच्चो के लिए कक्षा का न्यूनतम आकार ३५ वर्ग मीटर होना चाहिए|

4.3.4 बच्चो को विद्यालय में दी जाने वाली सुविधाओं का विवरण-

- पीने के पानी की सुविधा पूर्व प्राथमिक विद्यालय में नही है

जबकि ई.सी.ई. कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में बच्चों के लिए स्वच्छ पानी तथा की सुविधा होनी चाहिए।

4.3.5 समुचित प्रसाधन सुविधा पूर्व प्राथमिक विद्यालय में प्रदान की गयीं है

ई सी ई कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार प्रत्येक पूर्व प्राथमिक विद्यालय में टॉयलेट, साबुन, या राख, टोबिल या साफ कपडा तथा कूड़ादान की प्रसाधन सुविधा प्रदान की जानी चाहिए ।

4.3.6 विद्यालय में मध्यान भोजन की कोई व्यवस्था नही है,न ही बच्चो के सोने की व्यवस्था है,इसी कारण विद्यालय में कोई किचन की व्यवस्था भी नही है।

जबकि ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार प्रत्येक पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चो के पोषण तथा स्वास्थ्य को शामिल किया जाना अनिवार्य है । इसके लिए शिक्षको को विद्यालय में बच्चो को भोजन बना के देना चाहिए ।

इसी प्रकार ई.सी.ई. कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में बच्चो के सोने की समुचित व्यवस्था होना अनिवार्य है ।

इस संदर्भ में यह विद्यालय ई.सी.ई. के दोनों ही मानदंडो को पूरा नही करता है ।

4.3.7 विद्यालय में बच्चो के लिए कार्य कार्य करने का समुचित स्थान, स्टोर रूम, वरामदा, किचन, फर्स्ट एड बॉक्स, नियमित मेडिकल चेकअप की सुविधा प्रदान की गयी हैं ।

ई. सी. ई.कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में बच्चो को कार्य करने के लिए दीवार पर अतिरिक्त व्यवस्था होनी चाहिए, विद्यालय में स्टोर रूम, वरामदा, किचन, फर्स्ट एड बॉक्स आदि होना अनिवार्य है । बच्चो को नियमित स्वास्थ्य सुविधा दी जानी चाहिए ।

इस संदर्भ में पूर्व प्राथमिक विद्यालय ई.सी.ई. के सभी मानदंडो को पूरा करता है ।

उपकरण तथा सामग्री-

4.3.8 मांसपेसिय विकास के लिए विद्यालय में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण-

रस्सी, फिसल-पट्टी, सी-सॉ, झुला, बास्केट-बॉल, फिशिंग-गेम आदि का प्रयोग विद्यालय में मांसपेसिय विकास के लिए किया जाता है |

ई.सी.ई.कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार प्रत्येक पूर्व प्राथमिक विद्यालय में उन्नत उपकरण व सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए| जिससे बच्चों को उछलने, कुंदने, झूलने, साइकिल चलाना आदि के अनुभव प्रदान किये जा सके | इसके लिए छोटी-बड़ी बॉल, टायर, रिंग, रेट, तथा प्लास्टिक के डिब्बे आदि का प्रयोग किया जा सकता है |

इस संदर्भ यह विद्यालय ई.सी.ई. के लगभग सभी मान्द्नादो को पूरा करता है |

4.3.9 सोचने सम्बन्धी क्षमता के विकास के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री का विवरण-

सोचने की क्षमता के विकास के लिए विद्यालय में वर्णमाला, पजल्स, थीम आधारित पजल्स बोर्ड (जानवर, फल, ऋतू, वाहन,सहायक, आदि) बिल्डिंग व कंस्ट्रक्टिव ब्लाक,थीम बोर्ड, आदि सामग्री का प्रयोग किया जाता है|

ई.सी.ई. कार्यक्रम के मानदंडो के अनुसार पूर्व प्राथमिक विद्यालय में बच्चो रचनात्मक खेल के लिए ब्लाक,बॉक्स,प्लास्टिक ट्यूब, काल्पनिक खेल के लिए खिलोने तथा जोड़ तोड़ के लिए ब्लाक,रेत आदि तथा भाषा विकास व बौद्धिक विकास के लिए भिन्न सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए|

इस संदर्भ में विद्यालय द्वारा ई.सी.ई.कार्यक्रम के सभी मानदंडो का पालन करती है|

विद्यालय स्टाफ-

4.3.10 विद्यालय में शिक्षकों और सहायकों की संख्या-

शिक्षक - ०३

सहायक - ०२

4.3.11 विद्यालय में शिक्षको की नियुक्ति की न्यूनतम योग्यता-

शिक्षक -	बी.एड./डी.एड.	आयु	३०
सहायक -	८वीं पास	आयु	३०

4.3.12 कक्षा में बच्चों तथा शिक्षको की संख्या का अनुपात

५०:३ = १७:१

4.3.13 विद्यालय में बच्चो के प्रवेश के लिए निर्धारित न्यूनतम आयु-

पी.एस.प्रथम -	३ वर्ष
पी.एस.द्वीतीय-	४ वर्ष

विद्यालय क्रियाओं की समयावधि- ४ घंटे

विद्यालय कार्यक्रम को बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति को अपना के बनाई जा सकती है|

4.3.14 बच्चो के कार्यो का रिकॉर्ड रखने की विधियों का विवरण-

चेक लिस्ट, पोर्ट पोलियो, वर्कशीट, त्रेमासिक, अर्धमासिक, वार्षिक मूल्यांकन द्वारा |

4.3.15 ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक में निम्न लिखित योग्यताएं होनी चाहिए|

१०वी पास उत्तीर्ण तथा २ वर्ष की ई.सी.ई. ट्रेनिंग

१०वी पास उत्तीर्ण तथा १वर्ष की ई.सी.ई. ट्रेनिग

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार प्रवेश की आयु ३ वर्ष से ज्यादा नही होनी चाहिए |

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार शिक्षक छात्रा संख्या के बारे में कुछ नही कहा गया है

ई.सी.ई. मानदंडो के अनुसार विद्यालय कार्यक्रम की समयावधि ४ घटे से ज़्यादा नही होनी चाहिए |इस संदर्भ में पूर्व प्राथमिक विद्यालय ई.सी.ई.के सभी मानदंडो का पालन करता है |